pp
लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक
website: www.pawanprawah.com

# पवन प्रवाह

सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह

वर्ष 03 अंक 20 लखनऊ। सोमवार 06 से 12 फरवरी-2017 | e-mail-pawanprawah@gmail.com | डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2015-17 | मूल्य : तीन रुपये पृष्ठ-16



# ऋतु परिवर्तन-क्या हिमयुग को दस्तक दे रहा है?

**लेखक डॉ. भरत राज सिंह**
**स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं**

(भाग-4)

*पिछले तीन भागों में आप पढ़ चुके हैं कि जलवायु परिवर्तन औसती मौसम की दशाओं के ऐतिहासिक बदलाव आने को कहते हैं जो प्राकृतिक अथवा मानव के क्रिया कलापों के कारण हरित गृह प्रभाव व वैश्विक तापमान को मनुष्य द्वारा किये गए क्रिया कलापों का परिणाम है। तथा औद्योगिक व वाहनों की वृद्धि से निकलने वाले कार्बनडाइ ऑक्साइड आदि गैसों के वायुमण्डल में उत्तसर्जन की अधिकता से जलवायु परिवर्तन के कारण, हर वर्ष अतिवृष्टि, चक्रवाती व सुनामी तूफानों की घटनायें, ओला वृष्टि व हिमपात से विश्व का जनजीवन अस्त-व्यस्त हो रहा है और निरंतर उन्हें आगाह भी किया जा रहा है। यह भी अनुमानित है कि उत्तरीय ध्रुव की बर्फ जो 110 लाख वर्ग किलोमीटर थी उसके तीन चौथाई बर्फ की चट्टानें पिघल गयी हैं और सम्पूर्ण विश्व के मौसम में इससे ही उथल-पुथल हो रहा है।*

आइये अब जानते हैं कि अंटार्टिका व पूर्व में आये हिमयुग की जानकारी के बारे में।

औसत रूप से अंटार्कटिका, विश्व का सबसे ठंण्डा, शुष्क और तेज हवाओं वाला महाद्वीप है और सभी महाद्वीपों की तुलना में, इसका औसत उन्नयन सर्वाधिक है। अंटार्कटिका को एक रेगिस्तान माना जाता है, क्योंकि यहाँ का वार्षिक वर्षा केवल 200 मिमी (8 इंच) है और उसमें भी ज्यादातर तटीय क्षेत्रों में ही होता है। यहाँ का कोई स्थायी निवासी नहीं है लेकिन साल भर लगीग 1,000 से 5,000 लोग विभिन्न अनुसंधान केन्द्रों जो कि पूरे महाद्वीप पर फैले हैं, पर उपस्थित रहते हैं। यहाँ सिर्फ शीतानुकूलित पौधे और जीवन ही जीवित, रह सकते हैं, जिनमें पेंगुइन, सील, निमेटोड, टार्डीग्रेड, पिस्सू, विभिन्न प्रकार के शैवाल और सूक्ष्मजीव के अलावा टुंड्रा वनस्पति भी शामिल है।

हालांकि पूरे यूरोप में टेरा आस्ट्रेलिया (दक्षिणी भूमि) के बारे में विभिन्न मिथक और अटकलें सदियों से प्रचलित थे पर इस भूमि से पूरे विश्व का 1820 में परिचय कराने का श्रेय रूसी अभियान कर्ता मिखाइल पेट्रोविच लाज़ारेव और फैबियन गॉटलिएब वॉन बेलिंगशौसेन को जाता है। यह महाद्वीप अपनी विषम जलवायु परिस्थितियों, संसाधनों की कमी और मुख्य भूमियों से अलगाव के चलते 19वीं शताब्दी में कमोबेश उपेक्षित रहा। महाद्वीप के लिए अंटार्कटिका नाम का पहले पहल औपचारिक प्रयोग 1890 में स्कॉटिश नक्शानवीस ने किया था। अंटार्कटिका नाम यूनानी यौगिक शब्द एंटार्कटिक से आता है जिसका अर्थ 'उत्तर का विपरीत' है।

1959 में बारह देशों में अंटार्कटिक संधि पर हस्ताक्षर किए, आज तक छियालीस देशों ने इस संधि पर हस्ताक्षर किए है। संधि महाद्वीप पर सैन्य और खनिज खनन गतिविधियों को प्रतिबन्धित करने के साथ वैज्ञानिक अनुसंधान का समर्थन करती है और इस महाद्वीप के पारिस्थितिक क्षेत्र को बचाने के लिए प्रतिबद्ध है। विभिन्न अनुसंधान उद्देश्यों के साथ वर्तमान में कई देशों के लगभग 4,000 से अधिक वैज्ञानिक विभिन्न प्रयोग कर रहे हैं।

वैज्ञानिकों को पाँच बड़े हिमयुग ज्ञात हैः-

●ह्युरोनाई हिमयुग (Huronian Iceage) : यह सब से प्राचीन ज्ञात हिमयुग था और लगभग 2.4 से 2.1 अरब वर्ष पहले अपने चरम पर था। इसमें बहुत ही भयंकर सर्दी हुई थी और हिमयुग लम्बे अरसे तक रहा।

●क्रायोजेनाई हिमयुग (Cryogenian Iceage) : यह आज से लगभग 85 से 63 करोड़ वर्ष पूर्व हुआ और पिछले एक अरब वर्षों का सबसे भयंकर हिमयुग माना जाता है। इसमें पूरी पृथ्वी बर्फ से ढक गई थी और माना जाता है के उस समय अंतरिक्ष से देखने पर यह एक पूरा सफेद बर्फ का गोला नजर आती।

●ऐण्डीयाई-सहारवी हिमयुग (Andean-Saharan Iceage) : यह एक छोटा हिमयुग था जो आज से लगभग 46 से 43 करोड़ साल पहले घटा।

●करू हिमयुग (Karoo Iceage) : यह 36 से 26 करोड़ वर्ष पूर्व घटा। उस समय पृथ्वी पर वनस्पति और पौधे बहुत घने और विस्तृत हो गए। पृथ्वी के वायुमण्डल में कार्बन डाईऑक्साइड कम और ऑक्सीजन की मात्रा बहुत ज्यादा हो गई थी, जिससे धरती का तापमान काफी गिर गया और हिमयुग आरंभ हो गया।

●क्वाटर्नरी हिमयुग (Quaternary Icdeage) : यह वह हिमयुग है जो अभी चल रहा है और लगभग 25 लाख वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ था। इस हिमयुग में तापमान और हिम का प्रकोप ऊपर-नीचे होता रहा है, जिससे समुद्रों का पानी भी ऊपर-नीचे उठता रहा है।

अभी 2 फरवरी 2017 को जानकारी प्राप्त हुयी है कि अमेरिका में समुद्र से सटे एक पहाड़ी में जबरदस्त ज्वालामुखी फटा जिसकी लपटें कई किलोमीटर दूर से दिखाई दी। यह भी पता चला की इसकी ज्वाला का तापमान 2000 डिग्री सेंटीग्रेड से अधिक रहा है और विस्फोट ऐसे हो रहा था जैसे कोई आतिशबाजी हो रही हो। यह भी वैश्विक तापमान बढ़ने का ही कारण माना जा सकता है। जिससे ग्लेशियर व ध्रुवीय तलों से तेजी से बर्फ पिघल रही है और मौसम बदलने और बर्फबारी का एक कारण भी है।

उक्त से यह स्पष्ट होता है कि जो बर्फबारी इस वर्ष लगातार 3-माह से चल रही है जिसकी सम्भावना है कि यह फरवरी/मार्च में कुछ स्थानों पर भी पड़ेगी, तथा अगले साल अधिक मात्रा में भी पड़ने की सम्भावना है। यह हिमयुग के आगमन को नहीं दर्शाता है, बल्कि मानवीय कारणों से उत्पन्न प्रदूषण से जलवायु के उथल-पुथल को दर्शाता है।